Quadrant II - Notes

Programme: Bachelor of Arts (Second Year)

Subject: Hindi

Paper Code: DSC HNC 104

Paper Title: आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य: परिचयात्मक अध्ययन(1850-1960)

Unit: I

Module Name: प्रेमचंद युग

Module No: 05

Name of the Presenter: Mr. Akbarali Shaikh

Notes:

आधुनिक हिंदी उपन्यास के विकास क्रम को अध्ययन की दृष्टि से मोटे तौर पर तीन प्रमुख चरणों में बाँट सकते हैं- प्रेमचंद पूर्व उपन्यास, प्रेमचंद युगीन उपन्यास और प्रेमचंदोत्तर उपन्यास। प्रेमचंदयुग का समय सन् 1918 से लेकर 1936 तक माना जाता है। हिंदी कविता में जो छायावाद युग है वही उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद युग है। हिंदी उपन्यास साहित्य का यही दूसरा चरण 'प्रेमचंदयुग' के नाम से विख्यात है। प्रेमचंद युग का नामकरण मुंशी प्रेमचंद के गरिमामंडित व्यक्तित्व एवं साहित्य को केंद्र में रखकर किया गया।

प्रेमचंद पूर्व युग में उपन्यास विधा अपना स्वरूप ग्रहण करने का प्रयास कर रही थी। इस युग में लिखे गए उपन्यास प्रायः सुधारवादी एवं उपदेशवादी प्रवृत्ति से परिचालित थे तथा उनका मूल उद्‌देश्य मनोरंजन ही था। परिणामस्वरूप, उपन्यास जीवन से पूरी तरह कट कर सिर्फ मनोरंजन का

साधन बन गए थे। ऐसे समय में ऐसे साहित्यकार की आवश्यकता थी जो जीवन और साहित्य को एक साथ जोड़ सके। यह कार्य प्रेमचंद ने किया। हिंदी कथा साहित्य की सभी मान्यताएँ इन्होंने तोड़ दी और नयी प्रगतिशील दृष्टि को विकसित किया। इनके इसी प्रयत्न के कारण आज हिंदी उपन्यास साहित्य इतना समृद्ध है।

सबसे पहले प्रेमचंद उर्दू में नवाबराय के नाम से लिखा करते थे। इनकी प्रसिद्ध कहानी संग्रह 'सोजेवतन' को अंग्रेज़ सरकार द्वारा जब्त कर जला दिया गया और हिंदी में प्रेमचंद के नाम से लिखने लगे। 'उपन्यास सम्राट' प्रेमचंद के आगमन से हिंदी साहित्य जगत में एक नए युग की शुरुआत होती है, जिसे 'प्रेमचंद युग' तथा 'हिंदी उपन्यास का विकास युग' के नाम से जाना जाता है। प्रेमचंद मूलतः जनवादी विचारों के थे। वे मनुष्य को ही महत्त्व देते रहे। इनका व्यक्तिगत जीवन दुखमय था लेकिन दुख से ये पलायनवादी नहीं हुए। प्रतिकूल परिस्थितियों के साथ संघर्ष करते रहे। सच्चे अर्थों में प्रेमचंद कलम के सिपाही थे। उनके लेखन में कहीं भी पांडित्य एवं कृत्रिमता नहीं है।

प्रेमचंद ने हिंदी में कुल बारह उपन्यासों की रचना की है। जैसे सेवासदन, निर्मला, कायाकल्प, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, गोदान आदि। 'सेवसादन' प्रेमचंद का पहला प्रौढ़ हिंदी उपन्यास है। मगलसूत्र इनका अधूरा उपन्यास है। किसान जीवन का महाकाव्य 'गोदान' इनकी औपन्यासिक कृति है। उनकी प्रायः सभी उपन्यास सामाजिक ही है। प्रेमचंद के उपन्यास राष्ट्रीय आंदोलन, कृषक समस्या, मानवतावाद, भारतीय संस्कृति, शोषण, वेश्यावृत्ति, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा आदि विविध विषयों से संबंधित है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में सभी पात्र बड़े जीवंत लगते हैं। उनके प्रत्येक पात्र में जीने की शक्ति मिलती है। इनके यहाँ सभी तरह के पात्र मिलते हैं- रिक्शा चालक, अंधा भिखारी, पत्रकार, अध्यापक, जमींदार, पूंजीपति, डॉक्टर, अधिकारी, वकील, वेश्या, माँ, स्वतंत्रता सेनानी, ब्रह्मचारी, किसान, मजदूर, दलित आदि। प्रेमचंद को आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का लेखक कहा जाता है। अपने उपन्यासों में

पहले प्रेमचंद आदर्शवाद की बात करते थे किन्तु बाद में वे यथार्थवादी लेखक बन गए। प्रेमचंद के विचारों से प्रभावित होकर अन्य साहित्यकार आगे बढ़े। प्रेमचंद का केवल ऐतिहासिक महत्त्व नहीं हैं, बल्कि सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा प्रगतिशीलता की दृष्टि से भी महत्त्व है।

प्रेमचंद युगीन उपन्यासों की विशेषताएँ

यथार्थता

प्रेमचंद युगीन उपन्यासों की सबसे पहली और प्रमुख विशेषता है- यथार्थता। इस युग के उपन्यासकारों ने समाज में व्याप्त अनाचार, पापाचार, भ्रष्टाचार, विसंगती, बाह्याडंबर, अंधविश्वास, धार्मिक पाखंड आदि का यथार्थ चित्रण किया है। इस युग के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर प्रेमचंद ने सेवासदन में समाज की समस्या को स्थान दिया है। वेश्यावृत्ति से संबन्धित समस्या को कथा का आधार बनाया गया है। इसी तरह मजदूर, किसान, दलित आदि की समस्याओं को उद्घाटित कर उन्हें संघर्ष के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार इस युग के उपन्यासकारों में यथार्थवादी दृष्टिकोण परिलक्षित होती है।

भाग्य के प्रति अनास्था

इस युग के उपन्यासकार भाग्यवादी नहीं हैं। भाग्य की अपेक्षा कर्म को अधिक महत्त्व देते हैं। उनका मानना है कि कर्म करने से फल की प्राप्ति होती है। उदाहरण के रूप में गोदान का विरोही पात्र गोबर को देख सकते हैं। वह अपने पिता होरी से कहता है कि किसानों के दुख का कारण भाग्य नहीं, बल्कि महाजनों-साहूकारों का कुचक्र है। भगवान ने सभी को बराबर बनाया है।

वर्ग संघर्ष की पीड़ा

इस युग के उपन्यासकार मार्क्सवादी सिद्धान्त से प्रभावित है। इनका मानना है कि समाज में सभी समान है और सभी को बराबर का अधिकार दिया जाना चाहिए। लेकिन पूँजीपतियों ने निम्नवर्ग पर दबाव बनाकर उनका शोषण करते रहे। जिसे प्रेमचंद के गोदान और जयशंकर प्रसाद के तितली नामक उपन्यास में

देख सकते हैं। इन पूँजीपतियों के खिलाफ इस युग के उपन्यासकारों में जमकर विरोध किया।

नारी के प्रति सहानुभूति

इस युग के उपन्यासकारों ने वेश्यावृत्ति, सती प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, विधवा पुनः विवाह, अनमेल विवाह आदि समस्याओं को अपने उपन्यासों में जीवंतता के साथ प्रस्तुत किया है। नारी जीवन की समस्याओं से प्रेमचंद सदैव चिंतित रहे हैं। उनका मानना है कि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता वास करते हैं। यह उक्ति सुनने में तो अच्छी लगती है पर किसी ने भी उसकी पूजा नहीं की बल्कि उसके अधिकारों से भी वंचित रखा है। जिसके दर्शन प्रेमचंद के उपन्यासों में होते हैं। 'सेवासदन' में वेश्यावृत्ति और 'निर्मला' में दहेज प्रथा तथा अनमेल विवाह की समस्या को उठाया गया है।

प्रेमचंद के समकालीन जयशंकर प्रसाद, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, सियारामशरण गुप्त, विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' सूर्यकांत त्रिपाठी निराला आदि प्रमुख उपन्यासकार है।

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद ने तीन उपन्यासों का सृजन किया है- कंकाल, तितली और इरावती। इरावती इनका अधूरा ऐतिहासिक उपन्यास है। 'तितली' उपन्यास में पूँजीपतियों द्वारा निम्नवर्ग का शोषण अंकित है।

पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र

पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र ने सर्वप्रथम हिंदी उपन्यास में पत्रात्मक प्रविधि का प्रवर्तन किया है। इन्होंने पत्रात्मक प्रविधि में प्रथम उपन्यास 'चंद हसीनों के खतूत' शीर्षक से लिखा। यह उपन्यास अपने कथानक के कारण युवाओं में लोकप्रिय हुआ। इसमें हिन्दू-मुस्लिम के प्रेम एवं विवाह का चित्रण है। इसके अलावा दिल्ली का दलाल, शराबी, बुधुआ की बेटी, फागुन के चार दिन आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास है।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री

आचार्य चतुरसेन शास्त्री भी प्रेमचंद युग के प्रमुख उपन्यासकारों में गीने जाते हैं। इनके उपन्यास है- हृदय की परख, हृदय की प्यास, अमर अभिलाषा, व्यभिचारी, आत्मदाह आदि। 'अमर अभिलाषा' उपन्यास में विधवाओं पर होने वाले अत्याचार का चित्रण किया गया है।

सियारामशरण गुप्त

सियारामशरण गुप्त गांधीवादी विचारधारा के उपन्यासकार हैं। इनकी प्रमुख उपन्यास है- गोद, अंतिम आकांक्षा और नारी। इनकी प्रसिद्ध उपन्यास गोद में संदेह एवं अविश्वास के कारण स्त्री की समस्या और दर्द का चित्रण है।

अन्य उपन्यासकारों में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, शिवपुजन सहाय, अनूपलाल मंडल, भगती प्रसाद वाजपेयी, गोविंदवल्लभ पंत आदि का नाम लिया जा सकता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आधुनिक हिंदी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद और समकालीन उपन्यासकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस युग के उपन्यासकारों ने उपन्यास को मनोरंजन से ऊपर उठाकर सामान्य जनता की समस्याओं को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया। प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में विषय वैविध्य एवं शिल्पगत नवीनता दिखाई पड़ती है।